जनपद हरिद्वार में पंचायती राज–व्यवस्थाओं में महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता

वंदना सैनी
पूर्व शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान एस०एम०जे०एन० (पी०जी०) कालेज हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत

सारांश

किसी भी सभ्य तथा लोकतांत्रिक (शासन) समाज में जिसकी एक सुसंगठित राजनीतिक व्यवस्था है, नागरिकों से यह आशा की जाती है कि वे यह जानते हों कि राजनीतिक व्यवस्था किस प्रकार से काम करती है। प्राचीन समय में राजनीतिक व्यवस्था अपेक्षातयाः साधारण थी। धार्मिक नेता को उस समय ईश्वर समझा जाता था या ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था और उसके शब्द कानून माने जाते थे। उस समय संविधान की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। इसलिए राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक ज्ञान न तो विस्तृत था, ना ही उसकी अधिक आवश्यकता थी। किन्तु जैसे–जैसे राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप जटिल होता गया, वैसे–वैसे राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक ज्ञान की आवश्यकता तथा महत्व बढ़ा।

किसी भी समाज में जनता की राजनीतिक जागरूकता उस समाज की राजनीतिक व्यवस्था की सफलता की मुख्य शर्त है। अतः लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में इसका विशेष महत्व है क्योंकि लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था जनमत पर आधारित होती है और राजनीतिक जागरूकता स्वस्थ जनमत के लिए आवश्यक है। वस्तुतः जनता की राजनीतिक जागरूकता पर ही लोकतांत्रिक सफलता निर्भर करती है। इसीलिए लोकतांत्रिक राज्यों के लिए राजनीतिक जागरूकता का असाधारण महत्व है।

मूल शब्द – राजनीतिक जागरूकता, पंचायती राज व्यवस्था, जनसंचार के साधन, लोक कल्याण।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है अथवा नहीं।
2. महिलाओं की राजनीति में जागरूकता पंचायती राज–व्यवस्थाओं में सहायक सिद्ध हुई है अथवा नहीं।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध–पत्र में जनपद हरिद्वार की 50 व्यस्क ग्रामीण महिलाओं को अध्ययन के लिए चुना गया है। जिनसे साक्षात्कार के द्वारा सूचनायें एकत्रित की गई हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पंचायती राज–व्यवस्थाओं में महिलाओं की राजनीातिक जागरूकता को जानने के लिए जन–संचार के माध्यमों (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियों, टी०वी०, फिल्म आदि) महिला आरक्षण, सरकार द्वारा संचालित विभिन्न विकास योजनाएँ, लोक कल्याणकारी नीतियाँ, पंचायती राज व्यवस्था के संदर्भ में दृष्टिकोण, पंचायत सदस्यों/प्रधान का महिलाओं के प्रति व्यवहार का स्तर जैसे विषयों को शामिल किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों (पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं आदि) का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

सामान्य जनता के लिए राजनीतिक जागरूकता इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा उसे शासन के स्वरूप, संगठन, क्रिया–कलापों तथा शासन के अवयवों की जानकारी होती है। किन्तु लोकतांत्रिक राज्यों में नेतृत्व की दृष्टि से भी राजनीतिक जागरूकता की आवश्यकता होती है, क्योंकि यदि नेता राजनीतिक दृष्टि से अधिक जागरूक होंगे तो वे जनता का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं तथा वे अधिक सक्षम रूप से राजनीतिक क्रिया–कलापों में क्रियाशील तथा उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि नेतृत्व शासक वर्ग से सम्बन्धित है तो वह जनता को शासन की नीतियों तथा कार्यक्रमों की जानकारी दे सकता है और यदि वह शासक दल से सम्बन्धित नहीं है तो अपने राजनीतिक ज्ञान के बल पर शासन की नीतियों, कार्यक्रमों,

कार्यों की आलोचना कर सकता है और अपनी जागरूकता के बल पर जनमत को प्रभावित कर सकता है।

राजनीतिक जागरूकता का अर्थ एवं परिभाषा

राजनीतिक जागरूकता अथवा सरकार, राजनीतिक संस्थाओं के कार्यों तथा संविधान का ज्ञान आधुनिक संदर्भ में सक्षम अथवा आदर्श नागरिकता के एक आवश्यक तत्व के रूप में पहचानी जाती है।[1] **न्यूबोल्ड जी0 पोल** के अनुसार, "लोकप्रिय सरकार राजनीतिक जागरूकता पर निर्भर करती है।"[2] इसके बिना लोगों के पास अभिरूचि का कोई आधार नहीं है, वस्तुतः राजनीतिक जागरूकता राजनीतिक घटनाओं, राजनीतिक संस्थाओं तथा प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में ज्ञान है। यह राजनीतिक व्यवस्था को समझने की एक मूल धारणा है।[3]

राजनीतिक जागरूकता किसी भी समुदाय का वह विशेष गुण है जो उस समुदाय के सदस्यों के राजनीतिक दृष्टिकोणों एवं राजनीतिक रुझानों को अर्थपूर्ण रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करता है।[4] इसके अध्ययन द्वारा प्रचलित राजनीतिक अभिरुचियों एवं भविष्य में सम्भावित राजनीतिक आचरण का मूल्यांकन किया जा सकता है। अतः राजनीतिक जागरूकता राजनीतिक विकास का एक आकर्षक विषय बन जाता है। राजनीतिक जागरूकता अथवा ज्ञान देश के राजनीतिक तंत्र की कार्य प्रणाली का संगठन, राजनीतिक संस्थाओं तथा विश्व समुदाय से इसके सम्बन्धों का ज्ञान है।[5] वह राजनीतिक व्यवस्था के ढाँचे तथा प्रक्रिया एवं राजनीतिक व्यवस्था की प्रभावशीलता के मूल्यांकन की क्षमता है।[6]

सामान्यतः नागरिक की अपने राष्ट्र, उसकी राजनीतिक व्यवस्था, इतिहास, राजनीतिक संरचना, पदधारकों, संवैधानिक संरचना, विशेष नीतियों के कार्यान्वयन, राजनीतिक तंत्र में स्वयं के कार्यभार अधिकारों एवं अपने कर्त्तव्यों आदि के सम्बन्ध में ज्ञान आदि बातें राजनीतिक जागरुकता के अन्तर्गत आती हैं।

राजनीतिक जागरूकता आदर्श नागरिकता का एक महत्वपूर्ण गुण है।[7] हम यह कल्पना कर सकते हैं कि यदि लोग किसी राजनीतिक अथवा सरकारी मामलों अथवा कार्यकलापों का अनुसरण करते हैं, तो वे किसी रूप में उस प्रक्रिया से अवश्य जुड़े हैं, जिसके द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। यह सम्भव है कि वे न्यूनतम रूप से इससे सम्बद्ध हों। नागरिकता जिस रूप में इसका प्रयोग होता है, राजनीतिक उत्तरदायित्व तथा राजनीतिक सहभागिता इसके गुण हैं। राजनीतिक अथवा सरकारी क्रियाकलापों में भागीदारी, राजनीति में अधिक रूचि रखना आदि ऐसे तथ्य हैं, जिनके अभाव में नागरिकता की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। क्योंकि ये नागरिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।[8] वस्तुतः राजनीतिक व्यवस्था तथा राजनीतिक उत्तरदायित्व का सही

---

1 **वार्ष्णेय, उमा** (1983) : **एजुकेशन फार पालिटिकल सोशिलाइजेशन**, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ– 60 ।

2 **न्यूबोल्ड, जे0पोल0** (1956) : **डेवलपिंग द सेक्रेडी स्कूल केरिक्यूलम**, राईनैहार्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, पृष्ठ– 53 ।

3 **पाधी, के0एस0** तथा **सवात, डी0** : "पालिटिकल सोशिलाइजेशन आफ दि रूरल इलीट्स : ए केस स्टडी आफ एन उडियन पंचायत", इन **गुरु, श्यामा प्रसाद** (सम्पा०, 1991) : पालिटिकल सोशिलाइजेशन आफ द अरबन पोलीटिकल इलीट्स, इन्टर इंडिया पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृष्ठ– 63 ।

4 **वार्ष्णेय, उमा** (1983) : **एजुकेशन फार पालिटिकल सोशिलाइजेशन**, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ– 12 ।

5 **मार्सीलेस, वायरोन जी0** (सम्पा०) (1972) : **पालिटिकल यूथ ट्रेडिशनल स्कूल्स**, एंगल वुड क्लिपस, न्यू जर्सी, प्रिंसटन हाल, पृष्ठ– 4 ।

6 **मार्सीलेस, वायरोन जी0** (सम्पा०) (1972) : **पालिटिकल यूथ ट्रेडिशनल स्कूल्स**, एंगल वुड क्लिपस, न्यू जर्सी, प्रिंसटन हाल पृष्ठ– 65 ।

7 **ग्रेबरियल, आमंड** एण्ड **बर्वा सिड़नी** (1963) : **द सिविक कल्चर**, प्रिंसटन, एन०जे० प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ– 53 ।

8 **वीनियरिंग** एण्ड **वाइन रिंग** (1957) : **रीचिंग द सोशल स्टडिज इन सेक्रेड्री स्कूल्स**, जे० वीटाकर एण्ड सन्स लिमिटेड, लन्दन, पृष्ठ– 84 ।

ज्ञान अथवा समझ प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक प्रगति में सहयोग देती है। क्योंकि ये सही निर्णय के लिए आवश्यक होते हैं। एक आदर्श नागरिक को सही तथ्यों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। तथ्यात्मक ज्ञान का अभिप्राय राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित ज्ञान से है।[9] अतः एक आदर्श नागरिक से केवल राजनीतिक ज्ञान की ही आशा नहीं की जा सकती, बल्कि उससे यह आशा की जाती है कि वह राजनीति में रूचि ले, राजनीतिक चर्चा करे, मतदान में भाग ले, अन्य राजनीतिक कार्यों में भाग ले अन्य राजनीतिक क्रियाकलापों में भाग ले तथा सामान्य रूप से अपनी क्षमता के आधार पर अथवा सहभागिता द्वारा सरकार को प्रभावित करने की क्षमता रखें।

अतः लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की प्रभावशाली तथा बुद्धिसंगत राजनीतिक सहभागिता लोकतंत्र को सफल बनाती है। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था का आधार राजनीतिक जागरूकता को माना जाता है।

जन–संचार के साधन तथा राजनीतिक जागरूकता–

सम्भवतः संचार सभी प्रकार के समाजों में सामाजिक प्रक्रियाओं, क्रियाओं एवं अन्तःक्रियाओं का आधार कहा गया है। जनजातीय, कृषक तथा लघु समुदायों में संचार मौलिक व प्रत्यक्ष रूप में होता है जबकि आधुनिक औद्योगिक समाज में संचार का एक जटिल प्रारूप पाया जाता है जिसे आज जन–संचार कहा जाता है। अतः अध्ययनकर्त्री ने पंचायती राज–व्यवस्थाओं में महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता को जानने के लिए जन–संचार के साधनों में मुख्य रूप से समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन एवं चलचित्रों (फिल्मों) को सम्मिलित किया है।

सारणी संख्या– 1

उत्तरदाताओं के अनुसार जन–संचार के साधनों के उपयोग की बारम्बारता

जनसंचार के साधन / बारम्बारता का स्तर	समाचार पत्र / पत्रिकाएँ		रेडियों		टेलीविजन		फिल्म	
	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०
अक्सर	7	14.0	10	20.0	11	22.0	9	18.0
कभी कभी	6	12.0	11	22.0	12	24.0	11	22.0
कभी नहीं	37	74.0	29	58.0	27	54.0	30	60.0
कुल योग	50	100.0	50	100.0	50	100.0	50	100.0

सारणी से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ पढ़ने वाली 26.0 प्रतिशत तथा न पढ़ने वाली 74.0 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। रेडियों सुनने वाली उत्तरदाता 42.0 प्रतिशत तथा 58.0 प्रतिशत न सुनने वाली उत्तरदाता हैं। टेलीविजन देखने वाली उत्तरदाता 46.0 प्रतिशत तथा न देखने वाली उत्तरदाता 54.0 प्रतिशत हैं। जबकि फिल्म देखने वाली उत्तरदाता 40.0 प्रतिशत तथा न देखने वाली उत्तरदाता 60.0 प्रतिशत हैं। अतः स्पष्ट होता है कि टेलीविजन एवं सिनेमा वर्तमान में मनोरंजन तथा संचार की दुनिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सारणी संख्या– 2

शैक्षिक स्तर के आधार पर उत्तरदाताओं के अनुसार महिला आरक्षण के बारे में जानने का वर्गीकरण

शैक्षिक स्तर / उत्तरदाताओं का	उच्च शिक्षित		मध्यम शिक्षित		अल्प शिक्षित		अशिक्षित		कुल योग	
	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०

[9] **इनकैल्स, एलैक्स** (1969) : "पाट्रिसिपेट सिटिजनशिप इन सिक्स डेवलपिंग कन्ट्रीज", द अमेरिकन पोलिटिकल सांइस रिव्यू, भाग LXIII, पृष्ठ– 1120–1141 ।

दृष्टिकोण										
हाँ	7	77.8	5	35.7	2	22.2	00	0.0	14	28.0
नहीं	2	22.2	9	64.3	7	77.7	18	100.0	36	72.0
कुल योग	9	18.0	14	28.0	9	18.0	18	36.0	50	100.0

सारणी से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षित 77.8 प्रतिशत, मध्यम शिक्षित 35.7 प्रतिशत, अल्प शिक्षित 22.2 प्रतिशत तथा अशिक्षित शून्य प्रतिशत उत्तरदाता महिला आरक्षण के बारे में जानती हैं। जबकि महिला आरक्षण के बारे में न जानने वाली उच्च शिक्षित 22.2 प्रतिशत, मध्यम शिक्षित 64.3 प्रतिशत, अल्प शिक्षित 77.7 प्रतिशत तथा अशिक्षित 100.0 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षा स्तर जागरूकता को भी प्रभावित करती है।

लोक–कल्याण तथा राजनीतिक जागरूकता

लोक–कल्याण किसी राज्य के नागरिकों के मानसिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास में सहयोग देता है।

सारणी संख्या– 3

पंचायत सम्बन्धी विकास योजनाओं के प्रति उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण का वर्गीकरण

उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	सरकार द्वारा संचालित विभिन्न पंचायत सम्बन्धी विकास योजनाओं के बारे में जानकारी है।		विकास योजनाओं का लाभ जन–साधारण तक पहुँचाता है।	
	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०
हाँ	10	20.0	9	18.0
नहीं	18	36.0	21	42.0
पता नहीं	22	44.0	20	40.0
कुल योग	50	100.0	50	100.0

सारणी से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से केवल 20.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ही सरकार द्वारा संचालित पंचायत सम्बन्धी विकास योजनाओं के बारे में जानकारी है तथा 80.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इनकी जानकारी नहीं है। साथ ही साथ कुल उत्तरदाताओं में से केवल 18.0 उत्तरदाता ही इस बात से सहमत रही कि इस योजनाओं का लाभ जन–साधारण तक पहुँच पाता है। 42.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं का इस सम्बन्ध में दृष्टिकोण नकारात्मक है और 40.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि सरकार को ऐसी विकास योजनाएँ बनानी होगी जिनका लाभ जन–साधारण को मिल सके तथा ऐसे कार्यक्रम भी आयोजित करने होंगे जिससे जन–साधारण खासकर महिलाओं को विकास योजनाओं के बारे में जानकारी हो सके।

पंचायती राज–व्यवस्था का विकास प्रशासन–

सारणी संख्या– 4

पंचायती राज–व्यवस्था के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण का वर्गीकरण

उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण	पंचायत सदस्य/ प्रधान जन सम्पर्क के लिए आते हैं		समस्याओं को लेकर पंचायत सदस्य/ प्रधान से मिले हैं।		पंचायत सदस्य/ प्रधान समस्याओं पर ध्यान देते हैं	
	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०	कुल	प्रति०
अक्सर	6	12.0	8	16.0	6	12.0
कभी–कभी	7	14.0	9	18.0	5	10.0
कभी नहीं	37	74.0	33	66.0	39	78.0
कुल योग	50	100.0	50	100.0	50	100.0

सारणी से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदाताओं में से केवल 26.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पंचायत सदस्य/प्रधान जन–सम्पर्क के लिए आते हैं। 74.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पंचायत सदस्यों/प्रधान जन–सम्पर्क के लिए नहीं आते हैं। पंचायत सदस्यों/प्रधान

का जन–सम्पर्क के लिए न आना पंचायती व्यवस्था की प्रशासनिक क्षमता पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। जबकि प्रशासनिक क्षमता विकास के लिए आवश्यक अंग मानी जाती है। कुल उत्तरदाताओं में से 34.0 प्रतिशत उत्तरदाता ही अपनी समस्याओं को लेकर पंचायत सदस्यों/प्रधान से मिले हैं, जबकि 66.0 प्रतिशत उत्तरदाता कभी नहीं मिले। जन–साधारण का पंचायत सदस्यों/प्रधान से न मिलने का प्रमुख कारण उनका जन–सम्पर्क के लिए न आना है। कुल उत्तरदाताओं में से 22.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पंचायत सदस्य/प्रधान समस्याओं पर ध्यान देते हैं, जबकि 78.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पंचायत सदस्य/ प्रधान समस्याओं पर ध्यान नहीं देते। पंचायत सदस्यों/प्रधान का समस्याओं पर ध्यान न देना विकास की गति को अवरूद्ध करता है।

निष्कर्ष–

वस्तुतः ग्रामीण क्षेत्र में स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा यातायात, संचार साधनों के विकास, स्थानीय संस्थाओं के उद्‌भव, आर्थिक विकास, द्रुतगति से हो रहा शहरीकरण आदि कारणों से महिलाओं में राजनीतिक चेतना आयी है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ अभी भी बहुत कम जागरूक हैं, क्योंकि उन्हें आधुनिक समय की वे सभी सुविधाएँ सुलभ नहीं हो पा रही हैं जो उनकी राजनीतिक चेतना को विकसित कर सके, परन्तु तुलनात्मक रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व की अपेक्षा आज महिलाओं की राजनीतिक सोच समझ व जागरुकता अवश्य विकसित हुई है।

पंचायती राज–व्यवस्था का सबसे बड़ा प्रभाव राजनीतिक संरचना पर पड़ा है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। महिला नेतृत्व ग्राम पंचायतों में अपेक्षाकृत कम प्रतिस्पर्धा से आया है। उनकी ग्रामीण विकास तथा सामाजिक सुधार की बातें उत्साहवर्धक मानी जा सकती है। जन–संचार के साधनों, विकास योजनाओं, लोक–कल्याण की नीतियों इत्यादि के प्रति ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता, उनकी बदली राजनीतिक चेतना एवं पंचायती राज–व्यवस्थाओं में रूचि को दर्शाता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता अभी संक्रमण के दौर में है। आने वाले समय में वह अधिक सजग एवं प्रभावी सिद्ध होती, ऐसी शोधकर्त्री को आशा है।